दिनांक 7 जनवरी, 2012 को 1800 बजे अहमदाबाद में 'गुजरात और समुद्र' नामक पुस्तक के विमोचन के अवसर पर भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

मुझे गुजरात की समुद्र-नौवहन की परंपरा संबंधी इस उत्कृष्ट पुस्तक के विमोचन के अवसर पर आज के समारोह में भाग लेते हुए अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।

यह संपादित पुस्तक जितनी पुरातत्व, जलराशिकी (हाइड्रोग्राफी), उस समय की प्रौद्योगिकी, भूगोल एवं समाज शास्त्र के बारे में है, उतनी ही यह इसके इतिहास के बारे में भी है। 'दर्शक इतिहास निधि' के अध्यक्ष श्री हसमुख शाह और इस पुस्तक की सपांदक डा. लोतिका वर्धराजन द्वारा की गई पहल और प्रयास के लिए वे प्रशंसा के पात्र हैं। बेशक, अक्तूबर, 2010 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में नए क्षितिज, संपर्क-सूत्र खोजे गए हैं और भारतीय समाज के भी जटिल बहुरंगी स्वरूप को अनुपम परिदृश्य प्रदान किया है।

भारतीय इतिहास के किसी भी अध्ययन को भारतीय उप-महाद्वीप को घेरे हुए तीन विशाल जल निकायों के संदर्भ से अलग नहीं किया जा सकता है। भारत कम से कम चार सहस्राब्दियों तक समुद्र आधारित व्यापार और वाणिज्य की धुरी रहा है। माना जाता है कि दुनिया की पहली ज्वारीय गोदी हड़प्पा सभ्यता के दौरान गुजरात तट पर लोथल में लगभग ई.पू. 2300 में बनाई गई थी। वेदों में भी पोतों द्वारा आम तौर पर प्रयोग किए जाने वाले समुद्री मार्गों के ज्ञान, नौ-वहन अभियानों के बारे में बताया गया है और बेहद अच्छे ढंग से निर्मित एवं आरामदायक जहाजों का वर्णन किया गया है।

भारतीय साम्राज्यों, उनकी संपन्नता और सभ्यता के उत्थान पर समुद्र का प्रभाव समय के साथ निरंतर बढ़ता गया है। शताब्दियों से विविध क्षेत्रों के साथ जितनी मात्रा और प्रकृति के व्यापार किए गए, वे उपयुक्त नौ-परिवहन संबंधी कौशल के बगैर नहीं किए जा सकते थे। व्यापार जितना भारत के पूर्व में होता था उतना ही भारत के पश्चिम में भी होता था।

व्यापार के साथ राजनीति, संस्कृति और मानव भी परस्पर संपर्क में आए। पारस्परिक रूप से लाभदायक व्यापार से अत्यधिक संकीर्ण एवं स्वार्थपूर्ण सरोकारों के होने के कारण भारतीय व्यापारियों का भारतीय सामुद्रिक वाणिज्य पर नियंत्रण समाप्त होता गया। फिर भी, तटीय वाणिज्यिक समुदाय फले-फूले क्योंकि उनके पास बेहद स्वायत्तता और अवसर उपलब्ध थे और उन्हें भीतरी प्रदेश के राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से उच्च वर्ग द्वारा बाधित नहीं किया गया।

हमारे सभी तटीय अचंल गुजरात तट, मालाबार तट, कोरामंडल तट और बंगाल तट विशेषज्ञता के अपने वाणिज्यिक क्षेत्र, अपने वाणिज्यिक संभाषी और भौगोलिक रिश्ते रखते थे। उनका व्यापार भीतरी क्षेत्रों, अचंलों, तटीय और नदीय व्यापार की ओर भी उतना ही था जितना की यह लंबी दूरी का सामुद्रिक व्यापार के प्रति था।

मित्रो,

यह पुस्तक विगत युगों के रोचक तथ्यों तथा पहलुओं का बहुमूल्य खजाना है। इसमें नदियों के मार्गों के बदलने और सभ्यताओं के पतन का कारण उत्पन्न करने में भूकंपों की भूमिका और प्राचीन वायु चार्टों और नक्शों की सटीकता का वर्णन भी शामिल है। कथित रूप से फिरोजशाह तुगलक के काल में युआन राजवंश की महंगी नीले तथा श्वेत चीनी मिट्टी की वस्तुओं का विनाश भी समान रूप से पेचीदा था।

इस पुस्तक में गुजरात की वस्त्र परपंराओं और पश्चिम एशिया, यूरोप तथा दक्षिण-पूर्व एशिया पर इनके प्रभाव को भी शामिल किया गया है।

सबसे बढ़कर यह पुस्तक हमें समय का बोध कराती है। इस प्रयास को एक प्रायोगिक अध्ययन के रूप में देखा जा सकता है जिसे हमें खुद को, अपने देश के सभी अन्य क्षेत्रों के इतिहास को, परंपरा को, संस्कृति को, अपनी राजनीति तथा अर्थव्यवस्था को बेहतर ढ़ंग से समझने के लिए दोहराना चाहिए।

मैं एकबार पुनः इस पहल की सराहना करता हूं और मुझे इस समारोह में आमंत्रित करने के लिए श्री हसमुख शाह जी का धन्यवाद करता हूं।

****